# कहानियों के माध्यम से सार्थक बातचीत

ध्रुव देसाई

शिक्षकों और आमतौर पर शायद वयस्कों के बीच एक धारणा है कि बच्चे 'मासूम' होते हैं और दुनिया की कुछ कठोर वास्तविकताओं से उनकी 'रक्षा' की जानी चाहिए। इनमें दुःख, कुछ खोना और चिन्ता जैसी गहरी व्यक्तिगत भावनाएँ व जाति, वर्ग, जेंडर या नस्ल जैसे कुछ संरचनात्मक मुद्दे भी शामिल हो सकते हैं।

पिछले 10-12 वर्षों में विभिन्न स्थानों पर एक शिक्षक के रूप में, मैंने जाति और जेंडर जैसे 'समस्याजनक' मुद्दों पर शिक्षकों के दो प्रकार के व्यवहार देखे हैं। पहला है सामान्य प्रकार की, अत्यधिक कट्टर प्रतिक्रिया जो अब भी भारतीय समाज के अधिकांश हिस्सों में मानक है - 'लड़कियों को गणित पढ़ने की क्या आवश्यकता है' जैसी टिप्पणियों से लेकर साझे नल से पानी पीने के लिए 'निचली' मानी जाने वाली किसी जाति के बच्चे को पीटने जैसे व्यवहार तक। दूसरा है एक प्रकार की अनदेखा (elevated avoidance) करने की प्रतिक्रिया जहाँ शिक्षकों को लगता है कि कक्षाओं से पूर्वाग्रह समाप्त करने का तरीक़ा है यह दिखावा करना कि असमानताएँ मौजूद ही नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर, यह एक कथन हो सकता है, जैसे, 'यहाँ जेंडर समानता है; हम जेंडर असमानता के बारे में बात नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से विद्यार्थी इस विचार से परिचित हो जाएँगे - यहाँ हर कोई एक-दूसरे के प्रति मित्रवत है।' यह शायद एक नेक इरादे वाला प्रयास है, लेकिन यह उस भेदभाव, पूर्वाग्रह और कट्टरता के रोज़मर्रा के अनुभव की वास्तविकता को नहीं दर्शाता है जिसका सामना अल्पसंख्यकों और कमज़ोर समुदायों द्वारा किया जाता है। एक सांस्कृतिक पुनरुत्पादन भी होता है जो तब होता है जब हम मौजूदा स्थिति को बदलने की दिशा में सक्रिय रूप से काम नहीं करते हैं; ऐसा कहने से मेरा यह आशय है कि मौजूदा संरचनाएँ और रूप बने रहते हैं और ख़ुद की पुनर्रचना करते रहते हैं। जब हम वर्तमान पीढ़ियों में पाई जाने वाली जातिवादी धारणाओं पर खुले तौर पर ध्यान नहीं देते हैं, तो इस बात की बहुत अधिक सम्भावना रहती है कि अगली पीढ़ी वही रूप दोहराएगी और वही धारणाएँ रखेगी।

ऐसे स्थानों पर शिक्षकों के रूप में, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एक ऐसी प्रक्रिया के पहले क़दम के रूप में, अक्सर न दिखाई देने वाले इन अनुभवों को प्रकाश में लाएँ, जो इन अनुभवों को पैदा करने वाली असमानताओं पर ध्यान देने की दिशा में कार्य करती है। और अन्ततः (एक आदर्श दुनिया में) यह प्रक्रिया सवाल करना सीखने और फिर उन पूर्वाग्रहों को मिटाने की ओर ले जाती है जिनसे ये व्यवहार उत्पन्न होते हैं।

## इसे हल करने का एक प्रयास

मुझे पूर्वाग्रह को समझने के क्षेत्र में किए गए कार्यों को देखने और स्कूलों व अन्य संस्थागत परिवेशों में पूर्वाग्रह कम करने के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करने का मौक़ा मिला और मैंने इसमें कई महीने बिताए। विभिन्न सामाजिक मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों के कार्यों से, मैं गॉर्डन ऑलपोर्ट के कार्य पर लौटता रहा। उनके शोध से संकेत मिलता है कि कुछ स्थितियों में विभिन्न समूहों के सदस्यों के बीच सम्पर्क से समूहों के एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रह को कम करने में कुछ मदद मिल सकती है। यह विभिन्न रूपों में हो सकता है, जैसे समावेशी कक्षाएँ, कार्यशालाएँ या नाट्य प्रस्तुतियाँ। हालाँकि, शिक्षकों के रूप में, कुछ व्यावहारिक कारक हैं जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता है।

एक तो, हम विशिष्ट परिवेशों में काम करते हैं; हमारी कक्षाओं में विभिन्न समूहों के सदस्यों के बीच 'सम्पर्क' के लिए दबाव डालना असम्भव होता है यदि वे समूह पहले से ही निकटतम क्षेत्र में मौजूद नहीं हैं। मैं वर्तमान में एक बहुत विशिष्ट आबादी वाले एक छोटे से ग्रामीण स्कूल में काम करता हूँ - वहाँ धार्मिक और भाषायी एकरूपता है, लेकिन जाति और जेंडर के सन्दर्भ में विविधता है। इस स्थिति में, उदाहरण के लिए, मैं मुस्लिम, हिन्दू और ईसाई विद्यार्थियों के बीच बातचीत नहीं करवा सकता क्योंकि कक्षा में केवल हिन्दू विद्यार्थी हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इसके विकल्प मौजूद हैं - कार्यशालाएँ, स्कूल के बाद के सत्र आदि। हालाँकि, अधिक पाठ्येतर कार्य करने के लिए कभी-कभार ही समय उपलब्ध होता है, विशेष रूप से उन माता-पिता के दबाव के कारण, जिनकी अपने बच्चों के लिए शैक्षणिक आकांक्षाएँ होती हैं और एक शैक्षणिक और प्रशासनिक व्यवस्था के कारण जो परीक्षा के प्रदर्शन को प्राथमिकता देती हैं। अधिकांश स्कूलों में संसाधन भी सीमित होते हैं, जिसका अर्थ है कि कई विकल्प अधिकांश शिक्षकों की पहुँच से बाहर होते हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, मैंने 'विस्तारित सम्पर्क' की दिशा में काम करने का विकल्प चुना, यानी, मैं मीडिया के माध्यम से सम्पर्क जोड़ने की कोशिश करता हूँ - ऐसी कहानियों के माध्यम से अन्य संस्कृतियों और समूहों के लोगों से सम्पर्क जोड़ना, जिनमें विद्यार्थी ख़ुद को डुबो सकते हैं। मैंने सचित्र पुस्तकों और बाल साहित्य के साथ काम किया। हालाँकि यह एक ऐसा संसाधन है जिस पर कुछ ख़र्च करने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन तुलनात्मक ख़र्च लैपटॉप और टैबलेट या प्रोजेक्टर की तुलना में बहुत कम होता है। साथ ही, यह एक ऐसा संसाधन है जो कभी समाप्त नहीं होता या उसके उन्नयन या रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है। इसके अतिरिक्त, सचित्र पुस्तकें और बाल साहित्य (और उनका उपयोग करने वाली कोई गतिविधि), सामान्य तौर पर, भाषा शिक्षण के 'पाठ्यचर्या सम्बन्धी' लक्ष्यों में भी योगदान करते हैं।

## कुछ अनुभव

पिछले साल, मैंने कक्षा-3, 4 और 5 के साथ सप्ताह में दो या तीन पीरियड का उपयोग विद्यार्थियों को विभिन्न सचित्र पुस्तकें ज़ोर से पढ़ने और उनका उपयोग जाति, जेंडर, धर्म, कुछ खोने जैसे मुद्दों के बारे में बातचीत शुरू करने के लिए किया है। यह साल बेहद फ़ायदेमन्द रहा है और इसके परिणामस्वरूप कुछ सार्थक संवाद सम्भव हुए हैं और कई महत्त्वपूर्ण सवाल उठे हैं। लेकिन इस अनुभव के कुछ मुख्य अंशों पर चर्चा करने से पहले, मैं इस तरह के प्रोजेक्ट के लिए कहानियों और पुस्तकों का उपयोग करने के कुछ अनूठे लाभों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहूँगा।

जब छोटे विद्यार्थियों की एकाग्रता अवधि की बात आती है तो सचित्र पुस्तकें एक विशिष्ट आवश्यकता पूरी करती हैं। वे एक निश्चित ध्यान और एकाग्रता की माँग करती हैं (स्क्रीन पर कुछ देखने से अलग) जहाँ कुछ काम श्रोता/पाठक को करना होता है। ध्यान और सीखने का यह कौशल स्वयं सीखने के कौशल की बुनियाद तैयार करने के लिए एक मूलभूत घटक है जो अब भी कक्षाओं और हमारी शैक्षिक प्रणाली में प्रासंगिक है। हालाँकि, सचित्र पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की तुलना में कम समय में ऐसा करती हैं, क्योंकि आयु-उपयुक्त भाषा के साथ, छवियों वाली सचित्र पुस्तकें पाठक का ध्यान खींचने के साथ-साथ कहानी सुनाने में भी योगदान देती हैं। पाठ और छवि का संयोजन पाठक को दृश्य संकेत और सन्दर्भ उपलब्ध कराता है, लेकिन फिर भी कल्पना के लिए गुंजाइश छोड़ता है। यह पाठक को केवल निष्क्रिय रूप से कहानी ग्रहण करने की बजाय उसमें डूब जाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सचित्र पुस्तकों की एक शृंखला का उपयोग करके, मैं जेंडर या जाति जैसे मुद्दों से लगातार जुड़ने में सक्षम था, जिनके लिए बहुत अधिक तालमेल और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है और वह भी बच्चों को ऊब महसूस कराए बिना।

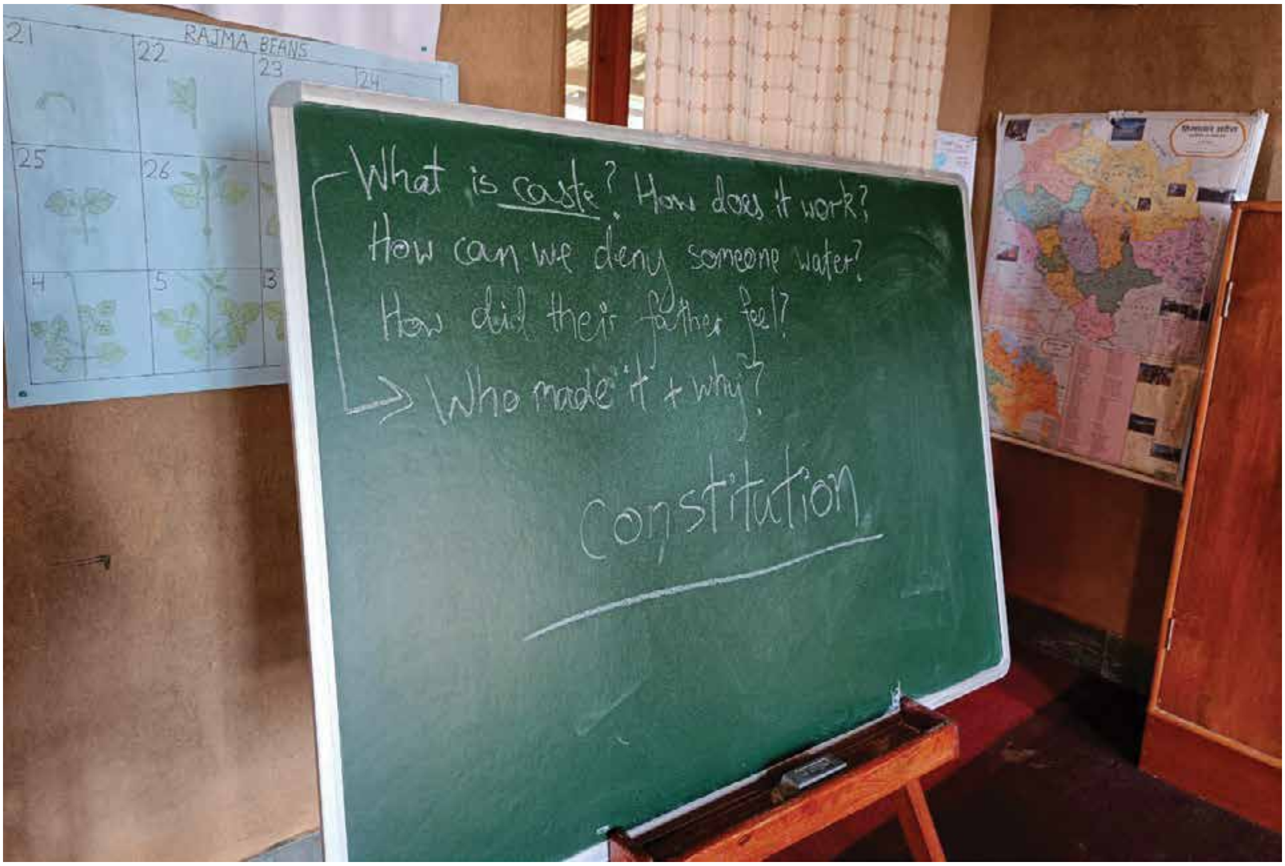
इसके अलावा, एक कहानी की किताब पढ़ने से हमें कुछ बिन्दुओं पर ठहरने का मौक़ा मिलता है, जिससे किताब का या किताब में दी गई छवियों का ज़िक्र करते समय भी चर्चा जारी रहती है। हम कहानी के भीतर आगे-पीछे जा सकते हैं और कहानी के प्रवाह को तोड़े बिना उन चीज़ों का आसानी से उल्लेख कर सकते हैं जो पहले घटित हो चुकी हैं, जो शायद मीडिया के अन्य रूपों के मामले में हमेशा सम्भव नहीं होता है।

## हमारी कक्षा से उदाहरण

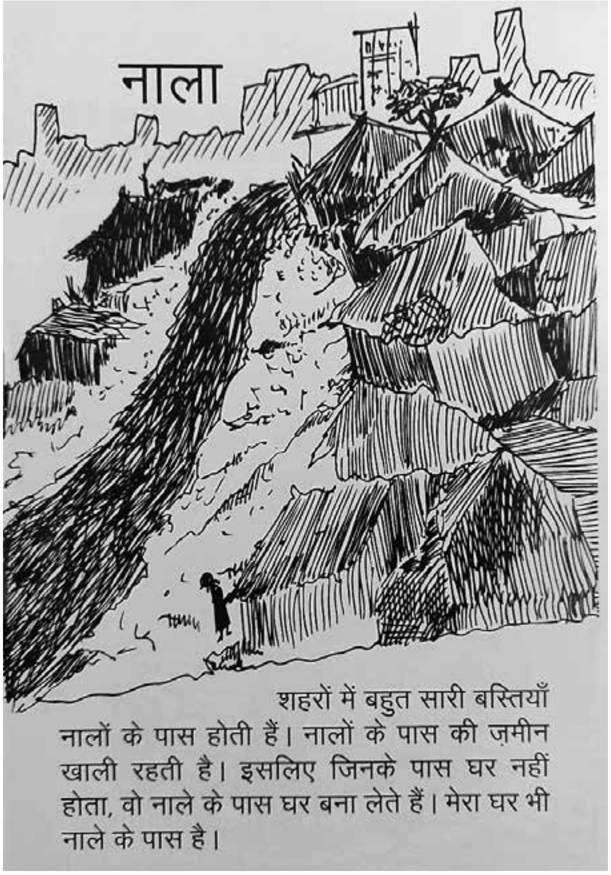
*मेरा नाम गुलाब है* नामक एक कहानी है, जिसमें लड़कों का एक समूह कहानी के मुख्य पात्र (गुलाब) को उसके पिता के पेशे (एक सफ़ाईकर्मी) के कारण चिढ़ाता है। कक्षा-5 में इस कहानी को पढ़ते हुए बातचीत में पता चला कि यहाँ भी एक विद्यार्थी दूसरे को उसके उपनाम (उसकी जाति का सूचक) को तोड़-मरोड़ कर उसे चिढ़ाता है। कहानी सुनने पर कुछ लड़कों ने टिप्पणी की कि यह कक्षा के विद्यार्थी को चिढ़ाए जाने के समान ही था।

इस उदाहरण में, जो लड़का चिढ़ा रहा था उसका कोई विशेष दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं था, उसके लिए यह बस मज़ाक का एक और रूप था जो वे सभी नियमित रूप से करते रहते थे। हालाँकि, पीड़ित विद्यार्थी इसे दिल पर ले रहा था लेकिन कुछ बोलने के लिए स्वयं को पर्याप्त सशक्त महसूस नहीं कर रहा था।

ये मुद्दे (जाति और जेंडर-आधारित असमानताएँ) सभी विद्यार्थियों के जीवन की जीवन्त वास्तविकताएँ हैं। कुछ मामलों में और कुछ विद्यार्थियों के लिए, वे इस वास्तविकता से बेहद परिचित होते हैं। यहाँ तक कि जहाँ वे सचेत रूप से इन मुद्दों से अवगत नहीं होते हैं, वहाँ भी ये उनके जीवन में प्रभाव रखते हैं। कक्षा में यह बातचीत करने से न केवल मैं जाति के बारे में बात करने में सक्षम हुआ, बल्कि मैं कक्षा की उस गतिशीलता को समझने में भी सक्षम हुआ जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं थी। इससे मैं कुछ ऐसे क़दम उठा सका जिससे छेड़छाड़ के शिकार बच्चे को अधिक सहज महसूस हुआ। यह एक ऐसा कारक है जिससे उसके आत्मविश्वास के स्तर में भी और बाद में, कक्षा में उसके प्रदर्शन में भी उल्लेखनीय रूप से बदलाव आया।




*चित्र-1 : कक्षा के दौरान उभरे कुछ प्रश्न और अन्तर्दृष्टियाँ।*




*चित्र-2 : नाला, मुस्कान, पढ़ो रखो शृंखला।*

## कहानी सुनाने से प्राप्त अन्तर्दृष्टि

हम कहानी सुनाने के द्वारा अपने विद्यार्थियों के जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं - कहानियाँ प्रासंगिक होती हैं और हमारे द्वारा पारम्परिक रूप से उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों की तुलना में हमारे आन्तरिक परिदृश्य को बहुत अधिक उभारती हैं। एक अन्य उदाहरण लीजिए, हम *आई विल सेव माई लैंड* नामक एक कहानी पढ़ रहे थे, जिसकी मुख्य पात्र एक युवा लड़की है। वह अपने पिता और दादी के साथ बातचीत करती है, लेकिन उसकी माँ का कोई उल्लेख नहीं है। कई विद्यार्थियों ने इसके बारे में पूछा - माँ कहाँ होगी आदि। मैंने उनके अनुमानों को प्रोत्साहित किया लेकिन इस मामले में कोई निश्चित बात नहीं की।

जब हमने कहानी पढ़ना समाप्त किया, जो मेरे लिए, जेंडर, जाति और भूमि के बारे में एक कहानी थी, कक्षा में से एक विद्यार्थी ने आँसू भरी आँखों के साथ मुझसे कहा कि 'माँ बुरी इन्सान है जो अपने बच्चे को छोड़कर दूर चली गई।' चूँकि हमने कभी यह निष्कर्ष नहीं निकाला था कि पात्र की माँ के साथ क्या हुआ था, मैं अपने विद्यार्थी की उग्रता से आश्चर्यचकित था। कक्षा के बाद, मैंने उस विद्यार्थी से बात की और पता चला कि उसकी माँ पिछले कुछ महीनों से एक अन्य ज़िले में काम कर रही थी और बच्चे घर पर बहुत खोए-खोए और परित्यक्त महसूस कर रहे थे। यह कुछ ऐसा था जिसके बारे में हम शिक्षक, न तो जानते थे, न ही हमने सुना था और न ही हमने इसके बारे में सोचा था कि इसका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

बच्चा जो दर्द महसूस कर रहा था वह विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा था, जैसे कि खेल के मैदान पर कुछ हिंसक आवेग जिन पर हम तब तक पूरी तरह से ग़लत तरीक़ों से ध्यान दे रहे थे। ऐसा नहीं है कि इस रहस्योद्घाटन से तुरन्त बच्चे के लिए कोई सफल समाधान निकला, लेकिन इससे हमें बच्चे की बेहतर ढंग से सहायता करने में मदद मिली।

इस तथ्य से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि संवेदनशीलता के साथ चुनी गई कहानियाँ बच्चों को नए अनुभवों के सम्पर्क में आने के अवसर उपलब्ध कराती हैं जिससे बच्चों का दिमाग़ खुलता है। उदाहरण के लिए, *नाला* नामक लघु कहानी (एक भारतीय शहर की बस्ती के एक बच्चे द्वारा लिखित) पढ़ते समय हमें एक खुले भूमिगत नाले के बगल में रहने और यहाँ तक कि इसकी सीमाओं को शौचालय के रूप में उपयोग करने का अनुभव समझ आया। कक्षा में सभी विद्यार्थियों ने घृणा व्यक्त की (हालाँकि कहानी में प्रयुक्त भाषा से उनका भरपूर मनोरंजन भी हुआ)। लेकिन कहानी से प्रेरित होकर हम दो अनजाने अनुभवों के बारे में गहन चर्चा करने में सक्षम हुए - रहने के लिए घर न होना और उपयोग के लिए शौचालय न होना। हमने इस बारे में बात करते हुए काफ़ी समय बिताया कि कैसे कुछ लोगों को इन बेहद ख़तरनाक और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में रहना पड़ता है। *मेरा नाम गुलाब है* कहानी के मामले में, अधिकारियों की सहायता के अभाव में उनका काम और भी ख़तरनाक हो जाता है। हम इस सवाल पर भी पहुँचे कि हमारे इलाक़ों में और हमारे घरों में इस तरह का काम कौन करता है। हालाँकि निश्चित रूप से यह कहानी का मुख्य विषय नहीं था, फिर भी इससे हमारे गाँव की बनावट, भूगोल और सामाजिक संरचनाओं के बारे में दिलचस्प बातचीत शुरू हुई।

*जादुई मच्छी*, एक हल्की-फुल्की कहानी है जिससे कुछ अद्भुत, शैक्षणिक रूप से समृद्ध बातचीत उभरकर सामने आई। यह कहानी चुनने का उद्देश्य कुछ ऐसी भारी कहानियों और मुद्दों के बीच एक विराम प्रदान करना था जिनके बारे में हम पढ़ रहे थे। इस कहानी में, एक बूढ़ी औरत और उसकी बेटियाँ अपनी धरती पर ख़ुशियाँ लौटाने की कोशिश में लग जाती हैं। इस हल्की-फुल्की फंतासी को पढ़ते हुए कक्षा की एक लड़की बोल उठी, "आमतौर पर लड़कियाँ इतनी दूर अकेले यात्रा नहीं कर सकतीं, ये लड़कियाँ यह सब कैसे कर पाती हैं?" इससे एक दिलचस्प चर्चा छिड़ गई, और बाद में लड़कियों और लड़कों द्वारा घर पर किए जाने वाले काम की मात्रा के बारे में थोड़ी अधिक संगठित बहस में बदल गई। इसके कुछ मुख्य अंश थे : हमारे ज़िले में भूमि से सम्बन्धित कानूनों के बारे में सीखना; कक्षा में कुछ लड़कियों का ऐसे काम करने या वह होने की इच्छा व्यक्त करना जो उन्हें लगता है कि आमतौर पर उनके लिए 'वर्जित' हैं; कक्षा में कुछ लड़कों का घर के सभी सदस्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाना और अनिच्छा से स्वीकार करना कि उनकी माताएँ और बहनें कहीं अधिक मेहनत करती हैं।

## क्या कारगर होता है और क्या नहीं

पिछले वर्ष के दौरान, मैंने पाया है कि कुछ ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जिन्हें हम अपनी योजना और कक्षाओं में लागू कर सकते हैं, जिनसे कक्षा में बातचीत के दौरान समृद्ध चर्चाएँ और खुलापन सम्भव होता है।

मैंने कहानियों से अपने निजी जुड़ाव के कारण संघर्ष किया है - कुछ ऐसी किताबें और कहानियाँ हैं जिन्होंने मुझे बहुत प्रभावित किया है और किसी विशेष कहानी के अपने विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर मैं अत्यधिक उम्मीद के साथ कक्षा में जाता हूँ। अक्सर, उस कहानी पर विद्यार्थियों से वह प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं होती जो मैं 'चाहता' हूँ और इससे समूह के साथ निष्पक्ष रूप से जुड़ने की मेरी क्षमता प्रभावित होती है। एक निश्चित दूरी बनाए रखना और विद्यार्थियों को बोरियत

या नापसन्दगी व्यक्त करने की अनुमति देना, दीर्घकालिक रूप से, रचनात्मक संवादों का एक प्रमुख घटक होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उन मामलों में कोई आदान-प्रदान नहीं होता है। बातचीत इस बारे में हो सकती है कि उन्हें क्या पसन्द है या क्या नापसन्द। शिक्षक के रूप में मुझे भी यह व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र महसूस करना चाहिए कि मुझे क्या पसन्द है और क्यों, लेकिन अपने विद्यार्थियों को किसी बात पर राज़ी करने की कोशिश किए बिना। क्योंकि, विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच शक्ति का असन्तुलन होता है। ऐसा करने से बच्चों के समूह का कम-से-कम एक वर्ग मुझे वही बताएगा जो मैं सुनना चाहता हूँ और उसकी प्रतिक्रियाओं में कम ईमानदारी होगी।

इस शिक्षण-विधि को आज़माते समय ध्यान में रखने योग्य मुख्य कारकों में से एक है कहानियों/ कहानी की किताबों का चयन। भाषा उम्र और स्तर के अनुरूप होनी चाहिए, ख़ासकर तब जबकि बच्चे स्वयं कहानी पढ़ रहे हों। यदि कहानी को उन्हें पढ़कर सुनाया जा रहा है तो स्तर ऊँचा हो सकता है क्योंकि स्पष्टीकरण दिए जा सकते हैं लेकिन बहुत अधिक जटिलता और ग़ैर-जरूरी चीज़ें समझाने के लिए बहुत अधिक रुकावटें लाने से कहानी सुनने के अनुभव का प्रभाव हल्का पड़ जाता है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानी की सामग्री और सन्दर्भ प्रासंगिक होने चाहिए।

हमें ऐसी कहानियाँ खोजने की ज़रूरत है जो पाठक के स्वयं के जीवन और अनुभव का दर्पण होने और नए संसारों में खुलने वाली एक खिड़की होने के बीच में कहीं हों। मुस्कान और तूलिका बुक्स जैसे प्रकाशकों के पास ऐसी कई किताबें उपलब्ध हैं जो विभिन्न भारतीय सन्दर्भों में रची हुई हैं और विदेशी प्रकाशनों की तुलना में अधिक प्रासंगिक हैं। जब सही कहानी उपलब्ध न हो तब भी यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने विद्यार्थियों को पाठ के साथ और उसके विपरीत, दोनों तरह से पढ़ना सिखाएँ।

शिक्षक को हल्की-फुल्की कहानियों को भारी कहानियों (जीवन, जाति जैसे जटिल मुद्दों पर आधारित) के साथ एकीकृत करने का प्रयास करने की आवश्यकता है, जो आलोचनात्मकता और प्रश्न पूछने के साथ ही संवाद और सोच-विचार करने की भावना को भी जीवित रख सके।


***References***

*I Will Save My Land*, written by Rinchin, illustrated by Sagar Kolwankar, published by Tulika Books

*Mera Naam Gulab Hai* [My Name is Gulab], by Sagar Kolwankar, published by Tulika Books

*Naala*, written by Shivani, illustrated by Kanak Shashi published by Muskaan Publications

*Jadui Macchi*, written by Chandrakala Jagat, illustrated by Shakuntala Kushram, published by Tulika Books


***Publishers of Indian Children's Literature***

Adivaani, Duckbill Books, Eklavya Publications, Ektara, Kalpavriksh Children's Books, Karadi Tales, Katha, Muskaan Publication, Navayana Publishing, Pickle Yolk Books, Pratham Books, Tara Books, Tulika Books, Young Zubaan




**ध्रुव देसाई** पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार के स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। वे वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय स्थित इंटरेस्ट ग्रुप फ़ॉर डायलॉग, फ्रेटरनिटी एंड जस्टिस से जुड़े हुए हैं। वे स्वयं के साथ-साथ अपने विद्यार्थियों के लिए सचित्र-पुस्तकों और खेलकूद में रुचि रखते हैं। उनसे *dhruva.desai13@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।



**अनुवाद :** सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय